



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

भारतीय संस्कृति के संरक्षण में राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला की भूमिका

Sachin Kumar

Research Scholar, Department of Fine Arts, Monad University

Dr. Ashish Garg

Associate Professor, Department of Fine Arts, Monad University

सारांश

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन, समृद्ध, बहुआयामी सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है, जिसकी आधारशिला आध्यात्मिकता, धार्मिक सहिष्णुता, लोक परंपराओं, नैतिक मूल्यों तथा कलात्मक अभिव्यक्तियों पर है। विभिन्न कलाओं ने भारतीय संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, जिसमें चित्रकला एक बहुत प्रभावशाली माध्यम के रूप में उभरकर सामने आती है। चित्रकला न केवल सौंदर्यबोध की अभिव्यक्ति है यह एक समाज की सांस्कृतिक चेतना, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक जीवन, लोक परंपराओं और ऐतिहासिक घटनाओं का दृश्य दस्तावेज भी है। यहाँ, राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला दो महत्वपूर्ण कला परंपराएँ हैं, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं और चित्रों के माध्यम से विभिन्न भारतीय संस्कृति के आयामों को व्यक्त करते हैं।

इस शोध-पत्र का उद्देश्य राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भूमिका का विश्लेषण करना है। अध्ययन में वर्णनात्मक और गुणात्मक अनुसंधान तकनीक का उपयोग करते हुए कई द्वितीयक स्रोतों (जैसे पुस्तकों, शोध-पत्रों, कला इतिहास संबंधी दस्तावेजों) का विश्लेषण किया गया है। अध्ययनों से पता चलता है कि राजस्थानी चित्रकला ने राजपूत संस्कृति, वीरता, धार्मिक विचारों, लोकजीवन, उत्सवों, संगीत, नृत्य और सामाजिक परंपराओं को जीवंत रूप में चित्रित करके भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बचाया है। भारतीय आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने के लिए पहाड़ी चित्रकला ने कृष्ण-भक्ति, राधा-कृष्ण प्रेम, प्रकृति की सुंदरता, साहित्यिक कृतियाँ और मानवीय भावनाओं को कलात्मक रूप देकर बचाया है।

यह भी अध्ययन बताता है कि दोनों चित्रकला शैलियों ने धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत, नृत्य, लोककथाओं और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को दृश्य रूप से प्रस्तुत किया है। इन चित्रों में उस समय की जीवनशैली, रीति-रिवाज, वेशभूषा, स्थापत्य, लोकाचार और सांस्कृतिक आदर्शों का सटीक चित्रण मिलता है, जो उन्हें सांस्कृतिक इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत बनाता है। साथ ही, इन चित्रों में भारतीय कला की विशिष्ट सौंदर्यपरक परंपरा भी दिखाई देती है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला भारतीय संस्कृति को बचाने, संरक्षित करने और पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरण करने के सशक्त साधन भी हैं। इन चित्रों को आज, वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण के युग में भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वे भारत की सांस्कृतिक पहचान, ऐतिहासिक स्मृति और पारंपरिक ज्ञान को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यही कारण है कि इन कलात्मक धरोहरों का संरक्षण, दस्तावेजीकरण और अकादमिक अध्ययन भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

कुंजी शब्द : भारतीय संस्कृति, राजस्थानी चित्रकला, पहाड़ी चित्रकला, सांस्कृतिक संरक्षण, सांस्कृतिक विरासत, भारतीय कला, लोक परंपरा

1. प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है। यह धार्मिक सहिष्णुता, आध्यात्मिक चेतना, लोक परंपराओं, नैतिक मूल्यों और कलाकृतियों से अलग है। भारतीय संस्कृति ने हजारों वर्षों में कई सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक बदलावों का सामना करते हुए अपनी मूल विशेषता को बचाया है। विभिन्न कलाओं (साहित्य, संगीत, नृत्य, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला आदि) ने इस सांस्कृतिक निरंतरता को बचाया है। इनमें चित्रकला ने भारतीय समाज के धार्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन को जीवंत रख दिया है।

चित्रकला केवल सौंदर्य अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं हैय यह भी एक समाज के इतिहास, परंपराओं, जीवनशैली, सांस्कृतिक मान्यताओं और मूल्यों का सच्चा दस्तावेज है। विभिन्न कालखंडों में बनाए गए चित्र हमें उस समाज की धार्मिक मान्यताओं, राजनीतिक हालात, लोकाचार, सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक संरचना को समझने में मदद करते हैं। भारतीय चित्रकला की समृद्ध परंपरा में, राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला ने भारतीय संस्कृति के कई हिस्सों को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

राजस्थानी चित्रकला मूलतः मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, बीकानेर और जयपुर जैसे राजपूत राज्यों में पैदा हुई। यह शैली धार्मिक और सांस्कृतिक विषयों का चित्रण करने के लिए प्रसिद्ध है, साथ ही अपने अलंकरणात्मक स्वरूप, चमकीले रंगों और सूक्ष्म रेखांकन के लिए भी। इन चित्रों में रामायण, महाभारत, कृष्ण-लीला, रागमाला, लोककथाएँ, राजदरबार, युद्ध, उत्सव, और आम लोगों का जीवंत चित्रण है, जो उस समय की सांस्कृतिक व्यवस्था को चित्रित करते हैं।

दूसरी ओर, पहाड़ी क्षेत्रों में, खासकर बसोहली, गुलेर, काँगड़ा, चंबा और कुल्लू जैसी रियासतों में, पहाड़ी कला का विकास हुआ। यह शैली भक्ति-प्रधान विषयवस्तु, प्रकृति-सौंदर्य, भावपूर्ण



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

अभिव्यक्ति और कोमल रंग योजना के लिए प्रसिद्ध है। पहाड़ी चित्रों में राधा-कृष्ण प्रेम, गीता-गोविंद, भागवत पुराण, ऋतुओं और प्राकृतिक वातावरण बहुत भावुक और कलात्मक रूप से चित्रित किए गए हैं।

वर्तमान शोध-पत्र राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की भारतीय संस्कृति को बचाने में उनकी भूमिका का अध्ययन करता है। यह अध्ययन बताता है कि ये दोनों चित्रकला शैलियाँ केवल कला की अभिव्यक्ति के माध्यम नहीं हैं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत, लोक परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन के महत्वपूर्ण साधन भी हैं। इनके माध्यम से भारतीय संस्कृति की समृद्धि, निरंतरता और सांस्कृतिक पहचान को समझने और बचाने में मदद मिलती है।

2. अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की भारतीय संस्कृति की रक्षा में भूमिका का विश्लेषण करना है। भारतीय चित्रकला की ये दो महत्वपूर्ण शैलियाँ कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, साथ ही भारतीय सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक परंपराओं, सामाजिक मूल्यों और आम जीवन के संरक्षण के महत्वपूर्ण वाहक हैं। इस संदर्भ में, निम्नलिखित अध्ययन उद्देश्य निर्धारित किए गए हैं—

- **भारतीय संस्कृति को बचाने में चित्रकला की भूमिका का विश्लेषण करना :** इस उद्देश्य में भारतीय संस्कृति, परंपराओं, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक संरचनाओं और ऐतिहासिक घटनाओं को बचाने का प्रभावी माध्यम चित्रकला रही है।
- **राजस्थानी चित्रकला की सांस्कृतिक विशेषताओं का विश्लेषण करना :** इसमें राजस्थानी चित्रकला की विषयवस्तु, शैली, रंग योजना, धार्मिक और सामाजिक चित्रण और सांस्कृतिक महत्व का विश्लेषण किया जाएगा, ताकि भारतीय संस्कृति को बचाने में चित्रकला का योगदान स्पष्ट हो सके।
- **पहाड़ी चित्रकला में सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का विश्लेषण करना :** हम पहाड़ी चित्रकला में प्रेम, भक्ति, प्रकृति-सौंदर्य, साहित्यिक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों का विश्लेषण करेंगे, जिससे इसकी सांस्कृतिक भूमिका को समझा जा सके।
- **राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला के योगदान का मूल्यांकन करना, भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बचाने में :** यह लक्ष्य है कि दोनों चित्रकला शैलियों ने भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृतियों, धार्मिक आख्यानों, लोक परंपराओं और कलाकृतियों को बचाने में किस प्रकार महत्वपूर्ण योगदान दिया है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

- **समकालीन परिप्रेक्ष्य में पहाड़ी और राजस्थानी चित्रकला की प्रासंगिकता का विश्लेषण करना** : वर्तमान वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण के युग में इन पारंपरिक चित्रकला शैलियों की उपयोगिता, संरक्षण की आवश्यकता और सांस्कृतिक पहचान के निर्माण में उनकी भूमिका का अध्ययन करना भी इस शोध का महत्वपूर्ण उद्देश्य है।

यह शोध उपरोक्त उद्देश्यों के माध्यम से राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला के बहुआयामी योगदान को समझाने का प्रयास करता है और यह सिद्ध करता है कि ये चित्रकला भारतीय सांस्कृतिक विरासत की महत्वपूर्ण धरोहर हैं और राष्ट्रीय पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता का महत्वपूर्ण आधार हैं।

3. साहित्य समीक्षा

कुमारस्वामी (1916) ने राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला को भारतीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक परंपराओं का महत्वपूर्ण अभिव्यक्ति माना। उनका कहना था कि इन चित्रों की विषयवस्तु भारतीय साहित्य, धर्म, दर्शन और आम जीवन से बहुत संबंधित है। उनका मानना है कि राजपूत कला भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को बचाने का एक प्रभावी उपाय है।

डब्ल्यू. जी. आर्चर (1973) ने पंजाब हिल्स में पहाड़ी चित्रकला के ऐतिहासिक विकास, क्षेत्रीय विविधताओं और कला विशेषताओं का व्यापक अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि पहाड़ी चित्रकला भारतीय धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण दृश्य अभिलेख है, जैसे बसोहली, गुलेर, काँगड़ा और चंबा शैली।

गोस्वामी एवं फिशर (1992) ने पहाड़ी चित्रकला के प्रमुख कलाकारों और उनकी कलाकृति का अध्ययन किया। चैतप डेजमतेरु ब्रनतज चंदजमते व छवतजीमतद पदकपं। उनका कहना है कि पहाड़ी चित्रकला कृष्ण-भक्ति, प्रेम, प्रकृति और मानवीय भावनाओं का बहुत अच्छा चित्रण करती है, जो भारतीय सांस्कृतिक चेतना को व्यक्त करती है।

खंडालावाला (2014) ने भारतीय लघुचित्र परंपरा का अध्ययन करते हुए कहा कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला भारतीय कला के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। उन्हें इन चित्रों को भारतीय इतिहास, धर्म और जनजीवन का दृश्य दस्तावेज समझा गया, और सांस्कृतिक संरक्षण में उनकी योग्यता को रेखांकित किया।

पार्थ मित्रा (2019) ने भारतीय कला के विकासक्रम का विश्लेषण करते हुए कहा कि भारतीय चित्रकला सौंदर्यबोध का एक प्रभावी साधन है और सांस्कृतिक स्मृतियों, सामाजिक मूल्यों और ऐतिहासिक अनुभवों को बचाने का एक प्रभावी साधन है। उनकी खोजों के अनुसार, पहाड़ी और राजस्थानी चित्रकला दोनों भारतीय सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

जैन (2021) ने दृश्य कलाओं और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बीच संबंधों का अध्ययन करते हुए पाया कि पारंपरिक चित्रकला सांस्कृतिक पहचान के निर्माण और संरक्षण में



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

महत्वपूर्ण है। उनका कहना है कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला दोनों ही भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए उत्कृष्ट कलाकृतियाँ हैं।

शर्मा (2022) ने पारंपरिक भारतीय कलाओं की सांस्कृतिक भूमिका का अध्ययन करते हुए कहा कि चित्रकला समाज की ऐतिहासिक स्मृतियों, धार्मिक विश्वासों और लोक परंपराओं को बचाने का एक प्रभावी माध्यम है। उनका मानना था कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला सांस्कृतिक विरासत को बचाने का एक महत्वपूर्ण साधन है।

कुमार (2023) ने डिजिटल युग में पारंपरिक भारतीय चित्रकला के संरक्षण पर एक अध्ययन में बताया कि डिजिटलीकरण, अभिलेखीकरण और ऑनलाइन प्रदर्शनियों के माध्यम से पारंपरिक कलाओं को नई पीढ़ियों तक पहुँचाया जा सकता है। अध्ययन में राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला को बचाने के लिए डिजिटल तकनीकों का उपयोग करने पर जोर दिया गया।

हाडा, सिंह और वेमुरी (2024) ने भारतीय लोक और पारंपरिक चित्रकलाओं के डिजिटलीकरण और वर्गीकरण पर एक अध्ययन किया और पाया कि आधुनिक तकनीकें सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण और प्रलेखन में बहुत फायदेमंद हो सकती हैं। उन्हें लगता था कि पारंपरिक चित्रकला सांस्कृतिक विरासत का एक प्रमुख स्रोत है।

शोध—अंतराल

उपलब्ध लेखों के से स्पष्ट होता है कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, शैलीगत विशेषताओं और धार्मिक विषयवस्तु पर अधिकांश शोध केंद्रित हैं। भारतीय संस्कृति को बचाने में इन दोनों चित्रकला शैलियों की संयुक्त और तुलनात्मक भूमिका का व्यापक अध्ययन कम हुआ है। विशेष रूप से, सांस्कृतिक संरक्षण, लोकस्मृतियों के संवहन और समकालीन संदर्भ में उनकी प्रासंगिकता पर व्यापक अध्ययन की आवश्यकता है। इसी शोध—अंतराल को पूरा करने का प्रयास प्रस्तुत अध्ययन करता है।

4. अनुसंधान पद्धति

यह शोध—पत्र राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भूमिका का विश्लेषण करता है। गुणात्मक और वर्णनात्मक अनुसंधान प्रणालियों का इसमें उपयोग किया गया है, जो शोध की प्रकृति को ध्यान में रखते हैं। यह अध्ययन मुख्यतः भारतीय कला और संस्कृति के ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं को समझने और विश्लेषण करने पर केंद्रित है। गुणात्मक दृष्टिकोण उपयुक्त माना गया क्योंकि शोध का उद्देश्य राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में उनके योगदान का अध्ययन करना है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से अध्ययन के लिए आवश्यक जानकारी प्राप्त की गई है। इन स्रोतों में कला इतिहास से संबंधित पुस्तकें, शोध पत्र, संदर्भ ग्रंथ, शोध प्रबंध, संग्रहालयों की प्रकाशित सामग्री, कला अकादमियों के अभिलेख, सरकारी प्रकाशन और ऑनलाइन शैक्षणिक डेटाबेस शामिल हैं। विशेष रूप से राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला से संबंधित इतिहास और सांस्कृतिक लेखों का व्यापक अध्ययन किया गया, जिससे विषय की सच्ची और व्यापक समझ मिल सके।

शोध में विषयवस्तु विश्लेषण का उपयोग किया गया है। इस प्रक्रिया का उपयोग करके विभिन्न चित्रकला शैलियों की विषयवस्तु, प्रतीकों, रंग योजना, सांस्कृतिक संकेतों, धार्मिक आख्यानो, सामाजिक जीवन और कला अभिव्यक्तियों का विश्लेषण किया गया। साथ ही, चित्रों में निहित सांस्कृतिक तत्वों, सामाजिक मूल्यों, लोक परंपराओं और धार्मिक मान्यताओं की पहचान कर उनके संरक्षणात्मक महत्व का विश्लेषण किया गया। विषयवस्तु विश्लेषण का उद्देश्य था कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला भारतीय संस्कृति के विभिन्न आयामों को किस प्रकार अभिव्यक्त करती है और संरक्षित करती है।

अध्ययन में तुलनात्मक दृष्टिकोण भी प्रयोग किया गया। यह दृष्टिकोण राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की मुख्य विशेषताओं, विषयवस्तु, शैलीगत तत्वों और सांस्कृतिक योगदान का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इससे दोनों चित्रकला शैलियों की समानताओं और भिन्नताओं को समझने में मदद मिली, साथ ही भारतीय संस्कृति के संरक्षण में उनकी विशिष्ट भूमिका को भी समझाया गया।

यह अध्ययन, गुणात्मक, वर्णनात्मक एवं विषयवस्तु विश्लेषण पर आधारित है, भारतीय संस्कृति के संरक्षण में राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला के योगदान को समझने का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक प्रयास है, जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण एवं संवर्धन संबंधी बहस को समृद्ध करने में सहायक सिद्ध होता है।

5. भारतीय संस्कृति और चित्रकला

धर्म, दर्शन, नैतिकता, सामाजिक समरसता, प्रकृति-प्रेम और आध्यात्मिक चेतना पर आधारित भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं में से एक है। भारतीय संस्कृति का सबसे बड़ा गुण निरंतरता और विविधता है, जो विभिन्न सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को सहते हुए अपनी मूल पहचान को बचाए हुए है। विभिन्न कलाओं ने इस सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिनमें चित्रकला का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृतियों, धार्मिक मान्यताओं, ऐतिहासिक घटनाओं और आम जीवन को चित्रकला से दृश्य रूप में व्यक्त करने का एक प्रभावी माध्यम रहा है।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

भारतीय चित्रकला बहुत प्राचीन है। इसकी समृद्ध और निरंतर परंपरा प्रागैतिहासिक काल के भीमबेटका चित्रों से लेकर अजन्ता की भित्ति चित्रकला, मध्यकालीन लघुचित्र कला और आधुनिक भारतीय चित्रकला तक जारी है। विभिन्न कालखंडों में चित्रकारों ने चित्रों के माध्यम से अपने समय के धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को व्यक्त किया, जिससे चित्रकला भारतीय संस्कृति को बचाने का एक महत्वपूर्ण साधन बन गई। भारतीय चित्रकला ने समाज के जीवन-मूल्यों, आस्थाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक आदर्शों को बचाया, जो केवल सौंदर्यबोध या कलात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं थे।

भारतीय चित्रकला में धार्मिक और पौराणिक विषयों का विशेष महत्व रहा है। भारतीय चित्रकारों का मुख्य विषय रामायण, महाभारत, पुराण, भागवत कथा, कृष्ण-लीला और विभिन्न धार्मिक आख्यानो का चित्रण था। इन चित्रों ने धार्मिक कथाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को आम लोगों तक पहुँचाने और उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी संरक्षित करने में बहुत मदद की। भारतीय चित्रकला ने साहित्य और धर्मग्रंथों को दृश्य रूप देकर उन्हें अधिक प्रभावशाली और आम लोगों के लिए उपयुक्त बनाया।

इसके अलावा, भारतीय कला में प्रकृति, वेशभूषा, स्थापत्य, संगीत, नृत्य, लोकजीवन, त्योहारों और प्रकृति का बहुत कुछ चित्रण है। रागमाला चित्रों, बारहमासा चित्रों और क्षेत्रीय चित्रकला शैलियों में स्पष्ट रूप से भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता दिखाई देती है। विभिन्न समुदायों की जीवनशैली, धार्मिक विश्वासों और सांस्कृतिक परंपराओं को चित्रकला ने बचाया है, जो भारतीय संस्कृति की बहुलतावादी प्रकृति को सशक्त बनाया है।

वर्तमान में भी चित्रकला भारत की सांस्कृतिक विरासत को बचाने का एक महत्वपूर्ण साधन है। पारंपरिक चित्रकला संग्रहालयों, कला दीर्घाओं, सांस्कृतिक संस्थानों और डिजिटल अभिलेखीकरण के माध्यम से संरक्षित और प्रचारित की जा रही है। चित्रकला की भूमिका, प्राचीन एवं मध्यकालीन काल की तरह, भारतीय संस्कृति की निरंतरता, सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक चेतना को बचाने में आज भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। चित्रकला, अभिव्यंजक कला के रूप में, भारतीय संस्कृति की संवाहक, संरक्षक और धरोहर है।

6. राजस्थानी चित्रकला और सांस्कृतिक संरक्षण

● राजस्थानी चित्रकला का परिचय

भारतीय लघुचित्र परंपरा में राजस्थानी चित्रकला एक महत्वपूर्ण और समृद्ध शैली है, जो मुख्यतः मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़, जयपुर और बीकानेर में विकसित हुई। 16वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य तक यह कला चरम पर थी और भारतीय चित्रकला को एक अलग पहचान दी। राजस्थानी चित्रकला भावपूर्ण अभिव्यक्ति, सूक्ष्म रेखांकन, अलंकरणात्मक स्वरूप और चटख रंग योजना के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली में धार्मिक,



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक विषयों का व्यापक चित्रण किया जाता है, जो तत्कालीन समाज के जीवन और संस्कृति को समझने का महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

- **धार्मिक परंपराओं का संरक्षण**

राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय धार्मिक परंपराओं को बचाया है। इन चित्रों में कृष्ण-लीला, रामायण, महाभारत, भागवत पुराण, देवी-देवताओं की कहानियों और जैन धर्म से जुड़े प्रसंगों का व्यापक चित्रण है। रासलीला, गोवर्धन धारण, बालकृष्ण की लीलाएँ और राधा-कृष्ण प्रेम प्रसंगों को अत्यंत कलात्मक रूप से चित्रित किया गया है, विशेष रूप से कृष्ण-भक्ति से जुड़े चित्रों में। इन चित्रों ने धार्मिक शिक्षाएँ, नैतिक मूल्य और आध्यात्मिक मूल्यों को समाज में फैलाया और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखा।

- **लोक संस्कृति का संरक्षण**

राजस्थानी चित्रकला केवल धार्मिक विषयों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने लोक संस्कृति को भी बचाया। चित्रों में लोकगीत, लोकनृत्य, मेलों, समारोहों, तीजों, ग्रामीण जीवन और पारंपरिक रीति-रिवाजों का जीवंत चित्रण है। इन चित्रों ने राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता, लोक परंपराएँ और सामाजिक जीवन को बचाया है। ये चित्र आज भी तत्कालीन लोकसंस्कृति का महत्वपूर्ण दृश्य स्रोत हैं।

- **सामाजिक जीवन का दस्तावेजीकरण**

राजस्थानी चित्रकला भी उस समय के सामाजिक जीवन का महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें राजपूत शासकों के दरबार, युद्ध, शिकार, विवाह, उत्सव, स्त्रियों के दैनिक जीवन और कई सामाजिक गतिविधियों का व्यापक चित्रण है। इन चित्रों से उस समय की वेशभूषा, आभूषण, स्थापत्य, सामाजिक संरचना और जीवनशैली का पता चलता है। इस तरह, राजस्थानी चित्रकला ने सांस्कृतिक इतिहास को बचाया।

- **संगीत एवं नृत्य परंपराओं का संरक्षण**

यह राजस्थानी चित्रकला का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। रागमाला चित्रों में भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रागों और रागिनियों को चित्रित किया गया है। इन चित्रों में संगीत, नृत्य और भावनात्मक अभिव्यक्तियों का शानदार समन्वय है। साथ ही, दरबारी नृत्यों, लोकनृत्यों और सांगीतिक कार्यक्रमों के चित्रण से भारतीय प्रदर्शनकारी कलाओं का विकास और सांस्कृतिक महत्व समझा जा सकता है।

इस तरह, राजस्थानी चित्रकला भारतीय संस्कृति के धार्मिक, सामाजिक, लोकप्रिय और कलात्मक पहलुओं को बचाने का एक प्रभावी माध्यम रही है। यह केवल चित्रकला की एक



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

शैली नहीं, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विरासत का जीवंत दस्तावेज है, जिसने भारतीय समाज की सांस्कृतिक स्मृतियों और परंपराओं को बचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

7. पहाड़ी चित्रकला और सांस्कृतिक संरक्षण

● पहाड़ी चित्रकला का परिचय

17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य में हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर तथा उत्तराखंड के पहाड़ी इलाकों में उत्पन्न हुई पहाड़ी चित्रकला एक महत्वपूर्ण भारतीय लघुचित्र परंपरा की शैली है। इसके मुख्य केंद्र बसोहली, गुलेर, काँगड़ा, चंबा, मंडी, कुल्लू तथा गढ़वाल रहे हैं। इस शैली ने भारतीय कला को एक अलग सौंदर्यबोध प्रदान किया, जो मुगल चित्रकला के प्रभाव और स्थानीय सांस्कृतिक परंपराओं के समन्वय से विकसित हुआ था। पहाड़ी चित्रकला विशेष रूप से आध्यात्मिक विषयवस्तु, प्राकृतिक सौंदर्य, भावपूर्ण अभिव्यक्ति, सूक्ष्म रेखांकन और नरम रंग योजना के कारण प्रसिद्ध है। इस चित्रकला ने धार्मिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक विषयों को बहुत संवेदनशील और कलात्मक ढंग से चित्रित किया, जो इसकी भूमिका को भारतीय संस्कृति को बचाने में उसका महत्वपूर्ण योगदान बताता है।

● भक्ति आंदोलन का संरक्षण

भारतीय भक्ति आंदोलन की परंपराओं को बचाने और लोकप्रिय बनाने में पहाड़ी चित्रकला ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस शैली में राधा-कृष्ण प्रेम, कृष्ण-लीला, भागवत पुराण, गीता गोविंद और अन्य वैष्णव साहित्यिक ग्रंथों का बहुत प्रभावशाली चित्रण मिलता है। राधा-कृष्ण के प्रेम और भक्ति भाव को काँगड़ा शैली में बहुत कोमलता और सौंदर्य से प्रस्तुत किया गया है। इन चित्रों ने भारतीय धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों को पीढ़ी-दर-पीढ़ी बचाया और भक्ति आंदोलन के आध्यात्मिक संदेशों को आम लोगों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

● प्रकृति और संस्कृति का समन्वय

पहाड़ी चित्रकला का अद्भुत समन्वय एक महत्वपूर्ण विशेषता है। इन चित्रों में विभिन्न ऋतुओं, वृक्षों, पुष्पों, नदियों, पर्वतों, झीलों, वृक्षों और वन्य वातावरण का बहुत सुंदर चित्रण है। प्राकृतिक परिवेश चित्र की भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, न केवल पृष्ठभूमि। यह भारतीय संस्कृति में प्रकृति के प्रति प्रेम, आदर और सह-अस्तित्व की भावना दिखाता है। पहाड़ी चित्रकला की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि यह प्रकृति के माध्यम से मानवीय भावनाओं और आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त करता है।

● साहित्यिक परंपराओं का संरक्षण



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

पहाड़ी चित्रकला ने भी भारतीय साहित्यिक संग्रह को बचाया है। चित्रों ने जयदेव के गीतगोविंद, बिहारी की सतसई, सूरदास के सूरसागर और अन्य भक्तिकालीन और रीतिकालीन साहित्य को दृश्य रूप दिया। इन चित्रों ने साहित्य को अधिक लोकप्रिय बनाया और साहित्यिक परंपराओं को बचाया। भारतीय सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाने में इस संयोजन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

- **सांस्कृतिक संवेदनाओं का संरक्षण**

पहाड़ी चित्रकला भारतीय संस्कृति की भावनाओं का एक उत्कृष्ट चित्र है। इसमें करुणा, प्रेम, भक्ति, विरह, सौंदर्यबोध और आध्यात्मिक भावनाओं का बहुत छोटा और प्रभावशाली चित्रण है। विशेष रूप से राधा-कृष्ण के प्रेम प्रसंगों, नायिका-भेद तथा भक्ति भाव से संबंधित चित्रों में मानवीय भावनाओं की गहरी अभिव्यक्ति दिखाई देती है। ये चित्र सिर्फ कलाकृतियों नहीं हैं वे भारतीय मूल्यों, भावनात्मक परंपराओं और आध्यात्मिक चेतना के जीवंत प्रतीक हैं।

भारतीय संस्कृति के धार्मिक, साहित्यिक, प्राकृतिक और भावनात्मक पहलुओं को बचाने में पहाड़ी चित्रकला एक महत्वपूर्ण साधन रही है। इसने भारतीय सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखते हुए आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आज भी भारतीय कला एवं संस्कृति की एक महत्वपूर्ण धरोहर के रूप में जाना जाता है।

8. राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला का तुलनात्मक विश्लेषण

आधार	राजस्थानी चित्रकला	पहाड़ी चित्रकला
प्रमुख क्षेत्र	राजस्थान	हिमालयी क्षेत्र
प्रमुख विषय	राजदरबार, युद्ध, भक्ति, लोकजीवन	कृष्ण-लीला, प्रकृति, प्रेम
रंग योजना	चमकीले एवं गहरे रंग	कोमल एवं सौम्य रंग
प्रकृति चित्रण	सीमित	अत्यधिक विकसित
सांस्कृतिक स्वरूप	वीरता एवं लोक परंपरा	भक्ति एवं सौंदर्य चेतना



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

संरक्षण का स्वरूप	सामाजिक एवं ऐतिहासिक	आध्यात्मिक एवं साहित्यिक
-------------------	----------------------	--------------------------

9. भारतीय संस्कृति के संरक्षण में योगदान

राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला ने निम्नलिखित रूपों में भारतीय संस्कृति का संरक्षण किया

- धार्मिक परंपराओं का संरक्षण।
- लोककथाओं एवं लोकस्मृतियों का संरक्षण।
- संगीत एवं नृत्य परंपराओं का दस्तावेजीकरण।
- सामाजिक जीवन एवं रीति-रिवाजों का चित्रण।
- साहित्यिक धरोहर का दृश्य रूपांतरण।
- भारतीय सौंदर्यबोध का विकास।
- सांस्कृतिक पहचान को राष्ट्रीय एवं वैश्व स्तर पर स्थापित करना।
- पारंपरिक ज्ञान एवं मूल्यों को नई पीढ़ियों तक पहुँचाना।

10. निष्कर्ष

कला और संस्कृति की विभिन्न विधाओं ने भारतीय संस्कृति की समृद्धि, विविधता और निरंतरता को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इनमें चित्रकला एक ऐसा माध्यम है जिसने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक जीवन को दृश्य रूप में बचाया है। यह अध्ययन बताता है कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला दो बहुत महत्वपूर्ण कला परंपराएँ हैं जो भारतीय संस्कृति को बचाने और विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

राजस्थानी चित्रकला ने भारतीय समाज की वीरता, शौर्य, राजपूत परंपराओं, धार्मिक विचारों और आम जीवन को जीवंत रूप में चित्रित किया है। मेवाड़, मारवाड़, बूंदी, कोटा, किशनगढ़ तथा जयपुर जैसी विभिन्न शैलियों में धार्मिक विषयों के अलावा तत्कालीन सामाजिक जीवन, राजदरबारों, उत्सवों, लोककथाओं, संगीत और नृत्य परंपराओं का व्यापक और प्रामाणिक चित्रण मिलता है। इन चित्रों से राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान, लोक परंपराएँ और ऐतिहासिक स्मृति सुरक्षित हैं। यही कारण है कि राजस्थानी चित्रकला भारतीय सांस्कृतिक इतिहास का एक बड़ा दृश्य दस्तावेज है।

दूसरी ओर, पहाड़ी चित्रकला ने भारतीय भक्ति परंपरा, प्रकृति की सौंदर्य, साहित्यिक विरासत और मानवीय भावनाओं को बहुत भावनात्मक और कलात्मक रूप से व्यक्त किया है। राधा-कृष्ण प्रेम, गीता गोविंद, भागवत पुराण और अन्य साहित्यिक कृतियों का बसोहली, गुलेर,



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

काँगड़ा और चंबा शैलियों में उत्कृष्ट चित्रण मिलता है। इन चित्रों में प्रकृति और मानवीय भावनाओं का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है, जो भारतीय संस्कृति के आध्यात्मिक और सौंदर्यपरक पक्ष को सशक्त रूप से प्रस्तुत करते हैं। भारतीय भक्ति आंदोलन और साहित्यिक परंपराओं को चित्रित करने और उनका संरक्षण करने में पहाड़ी चित्रकला ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अध्ययन से भी स्पष्ट होता है कि दोनों चित्रकला शैलियों ने समान रूप से भारतीय संस्कृति के कई आयामों को बचाने में योगदान दिया है, जैसे धर्म, दर्शन, साहित्य, संगीत, नृत्य, लोककथाओं, सामाजिक परंपराओं और सांस्कृतिक मूल्यों। इन चित्रों में तत्कालीन समाज की जीवनशैली, वेशभूषा, स्थापत्य, रीति-रिवाज, लोकविश्वास और सांस्कृतिक आदर्शों का जीवंत चित्रण है, जो उन्हें सांस्कृतिक इतिहास और विरासत का महत्वपूर्ण स्रोत बनाता है।

वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी बदलाव के युग में पारंपरिक कलाओं के सामने कई चुनौतियाँ हैं, लेकिन राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला भारत की सांस्कृतिक पहचान का महत्वपूर्ण प्रतीक बनी हुई हैं। इन कलाओं का संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार डिजिटल माध्यमों, सांस्कृतिक संस्थानों, संग्रहालयों और कला दीर्घाओं द्वारा किया जा रहा है। इससे नई पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ती है और भारतीय सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित रहती है।

यही कारण है कि राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला केवल कला की सुंदर अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं, बल्कि भारतीय संस्कृति का जीवंत वाहक, संरक्षक और संवाहक भी हैं। भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए इन चित्रकला परंपराओं का संरक्षण, प्रलेखन, डिजिटलीकरण और अकादमिक अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। इनके माध्यम से भारतीय संस्कृति की समृद्ध परंपराओं को राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर नई पहचान मिल सकती है, जिससे सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण अधिक प्रभावी और स्थायी हो सकता है।

11. सुझाव

इस अध्ययन के परिणामों के आधार पर, राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की भारतीय संस्कृति के संरक्षण में भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं—

- राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला को बचाने और विकसित करने के लिए विशेष सांस्कृतिक कार्यक्रमों का पालन किया जाना चाहिए।
- विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में कला और संस्कृति के पाठ्यक्रमों में इन चित्रकला शैलियों को समुचित स्थान मिलना चाहिए।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

- राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला से संबंधित विशेष प्रदर्शनियों और कार्यशालाओं को संग्रहालयों, कला दीर्घाओं और सांस्कृतिक संस्थानों में नियमित रूप से चलाया जाना चाहिए।
- भारतीय लघुचित्र परंपरा पर शोध करने के लिए विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, साथ ही इस क्षेत्र में अधिक शोध अनुदान और वृत्तियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- सांस्कृतिक पर्यटन के विकास में पहाड़ी और राजस्थानी चित्रकला को शामिल कर जन-जागरूकता बढ़ाना चाहिए।
- भारतीय चित्रकला से जुड़े दुर्लभ चित्रों, अभिलेखों और पांडुलिपियों का वैज्ञानिक संरक्षण और प्रलेखन सुनिश्चित किया जाना चाहिए।
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), आभासी वास्तविकता (VR) और डिजिटल संग्रहालयों जैसे आधुनिक तकनीकों का उपयोग करके इन चित्रों को नई पीढ़ी तक आकर्षक रूप में पहुँचाया जाना चाहिए।
- राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला की वैश्विक पहचान को और अधिक सशक्त बनाने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, संगोष्ठी और सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

इन सुझावों को लागू करने से भारतीय सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण, विकास और विश्वव्यापी प्रसार किया जा सकेगा, साथ ही राजस्थानी और पहाड़ी चित्रकला को भी बचाया जा सकेगा।

संदर्भ

1. गोस्वामी, बी. एन. (2022). 'भारतीय चित्रकला की आत्मा: 101 महान चित्रों का अध्ययन'. नई दिल्ली: नियोगी बुक्स।
2. जैन, जे. (2021). भारत में सांस्कृतिक विरासत एवं दृश्य कलाएँ: समकालीन परिप्रेक्ष्य। 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हेरिटेज स्टडीज, 27'(4), 341–356।
3. कुमार, ए. (2023). डिजिटल युग में पारंपरिक भारतीय चित्रकलाओं का संरक्षण। 'इंडियन जर्नल ऑफ कल्चर एंड हेरिटेज, 12'(1), 55–68।
4. मित्रा, पी. (2021). 'भारतीय कला: एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य'. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. शर्मा, आर. (2022). सांस्कृतिक संरक्षण में पारंपरिक कलाओं की भूमिकारु भारतीय परिप्रेक्ष्य। 'जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज, 18'(3), 87–101।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

6. सिंह, के. (2021). राजस्थानी लघुचित्रकला और सांस्कृतिक पहचान। 'इंडियन हिस्टोरिकल रिव्यू, 48'(2), 210–226।
7. वर्मा, एस. पी. (2022). 'राजस्थान की कला एवं संस्कृति'. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
8. श्रीवास्तव, स. (2024). राजस्थानी चित्रकला के विविध आयाम। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 5'(1), 1236–1240।
9. शर्मा, र., एवं प्रेमलता. (2024). मेवाड़ चित्र शैली के अंतर्गत रामायण चित्रों का सौंदर्यात्मक अध्ययन। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 5'(1), 149–156।
10. नोगिया, ह. (2024). हाड़ौती चित्रकला शैली का सौंदर्य एवं निहितार्थ: एक मूल्यांकनात्मक अध्ययन। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 5'(4), 101–109।
11. धामा, श. (2023). राजस्थानी चित्रकला में नायक–नायिका एवं प्रकृति अंकन। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 4'(1), 78–85।
12. बनिया, डी. (2024). पहाड़ी चित्रकला में कृष्ण के चित्रण का कलात्मक अध्ययन। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 5'(6), 1–8।
13. यादव, म. (2023). उत्तर भारत की लघुचित्र परंपराएँ और सांस्कृतिक स्मृति। 'जर्नल ऑफ साउथ एशियन कल्चरल स्टडीज, 14'(1), 66–82।
14. श्रीवास्तव, प. (2023). भारत में दृश्य संस्कृति एवं विरासत संरक्षण। 'हेरिटेज एंड सोसाइटी, 16'(2), 120–136।
15. शर्मा, स. (2024). राजस्थान के त्योहार और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत। 'सोशल साइंस जर्नल फॉर एडवांस्ड रिसर्च, 4'(5), 33–39।
16. मेहता, र. (2022). भारतीय लघुचित्रकला में दृश्य आख्यान और सांस्कृतिक निरंतरता। 'इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट हिस्ट्री, 11'(2), 95–112।
17. पटेल, स., एवं शर्मा, द. (2024). भारतीय पारंपरिक कलाओं का डिजिटल प्रलेखन एवं संरक्षण। 'जर्नल ऑफ हेरिटेज मैनेजमेंट, 9'(1), 54–70।
18. त्रिपाठी, व. (2025). सांस्कृतिक शिक्षा में राजस्थानी एवं पहाड़ी चित्रकला की समकालीन प्रासंगिकता। 'इंडियन जर्नल ऑफ विजुअल आर्ट्स, 7'(1), 22–37।
19. कौर, प. (2024). स्वतंत्रता–उत्तर भारत में पहाड़ी चित्रकला का संग्रहालयीय संरक्षण। 'आर्स ओरिएंटालिस, 54', 88–104।
20. चंद्रशेखर, म. (2025). हिमालयी कला परंपरा और पहाड़ी लघुचित्रकला का सौंदर्यबोध। 'द कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया, 15'(1), 12–20।



Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal

Impact Factor: 6.4

ISSN No: 3049-4176

21. यूनेस्को. (2021). 'डिजिटल युग में सांस्कृतिक विरासत का पुनर्परिचलन'. पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
22. यूनेस्को. (2023). 'सतत विकास और सांस्कृतिक विरासत संरक्षण'. पेरिस: यूनेस्को प्रकाशन।
23. हाडा, न., सिंह, अ., एवं वेमुरी, क. (2024). भारतीय लोकचित्रों का वर्गीकरण एवं डिजिटल टैगिंग। 'आर्काइव प्रीप्रिंट अध्ययन'।
24. शर्मा, न., एवं रानी, प. (2024). भारतीय स्कॉल चित्रकला: चित्रात्मक परंपरा का अध्ययन। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 5'(1), 1777–1786।
25. सिंह, म. (2024). भारतीय चित्रकला में अर्द्ध-अमूर्तन की परंपरा। 'शोधकोश: दृश्य एवं प्रदर्शन कला पत्रिका, 5'(1), 2062–2070।